टिप्पणी

11

सार-लेखन

विचारों को भाषा में अभिव्यक्त करने की अनंत संभावनाएँ छिपी होती हैं। कई बार हम छोटी-से-छोटी बात का वर्णन बहुत विस्तार से करते हैं, तो कई बार बहुत लंबी-चौड़ी विस्तृत बात को एकदम थोड़े शब्दों में व्यक्त कर लेते हैं। जिस प्रकार, छोटी-सी बात को विस्तार देना एक कला है, उसी प्रकार, विस्तार से कही गई बात को कम शब्दों में व्यक्त कर देना भी एक कला है। विस्तार से कही गई बात को कम शब्दों में व्यक्त करना ही सार-लेखन कहलाता है। आइए, इस पाठ में हम इस कला का अभ्यास करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- सार के अर्थ और उसकी उपयोगिता का उल्लेख कर सकेंगे;
- सार और भाव-पल्लवन में अंतर बता सकेंगे;
- सार-लेखन के विभिन्न रूपों का उल्लेख कर सकेंगे;
- सार-लेखन की प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे;
- उपयुक्त भाषा-शैली में सार-लेखन कर सकेंगे।

11.1 सार-लेखन का अर्थ और उपयोगिता

आइए, हम समझें कि सार-लेखन क्या होता है और हमारे लिए उसकी क्या उपयोगिता है। यह तो आप जानते ही हैं कि हमारे जीवन में व्यस्तताएँ निरंतर बढ़ती ही जा रही हैं और समय का अभाव होता जा रहा है। आप यह भी जानते हैं कि मनुष्य के सारे क्रियाकलापों में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। आपने बहुतों को यह कहते सुना होगा – ''जा-जा, काम करने दे, फ़ालतू बातें मत कर।''

इसका अर्थ हुआ कि फालतू बातें न करके उचित, उपयुक्त और संक्षिप्त बात करने का महत्त्व है। मतलब यह है कि भाषा का ऐसा प्रयोग किया जाना चाहिए, जिससे समय की बचत हो। अगर कम शब्दों का प्रयोग करेंगे, तो समय भी कम ख़र्च होगा और दूसरा आदमी भी हमारी बात ध्यानपूर्वक सुनेगा। इसके अतिरिक्त संचार-क्रांति के इस युग में टेलीफ़ोन, फ़ैक्स आदि पर पैसे भी बचेंगे। कम शब्दों में बात करना या लिखना एक कौशल है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इससे लाभ होता है।

यह तो हुआ कम शब्दों में अपनी बात कहने का भाषाई कौशल। दूसरा एक और काम होता है– किसी दी हुई सामग्री को कम शब्दों में व्यक्त करने की कला; इसी को सार-लेखन कहते हैं। सार-लेखन में किसी दूसरे के द्वारा लिखी गई विस्तृत बात को उसका मूल भाव सुरक्षित रखते हुए कम शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है।

कम शब्दों में बात कहने का कौशल सार-लेखन में सहायक होता है और सार-लेखन के अभ्यास से भाषा में हमारी कुशलता बढ़ती है।

विभिन्न क्षेत्रों में सार-लेखन की उपयोगिता है। अख़बारों में जगह के हिसाब से समाचार-संपादक समाचारों का सार-लेखन करते हैं। 'आकाशवाणी' और 'दूरदर्शन' पर समय के हिसाब से यही काम किया जाता है। कई बार लेखों, यहाँ तक कि पुस्तकों तक का सार तैयार किया जाता है। सरकारी कार्यालयों में भी सहायक द्वारा पत्रों और कभी-कभी तो पूरी फ़ाइल का सार-लेखन किया जाता है।

11.2 सार-लेखन और भाव-पल्लवन में अंतर

सार-लेखन और भाव-पल्लवन के अंतर को आगे दिए गए आरेख द्वारा समझा जा सकता है–

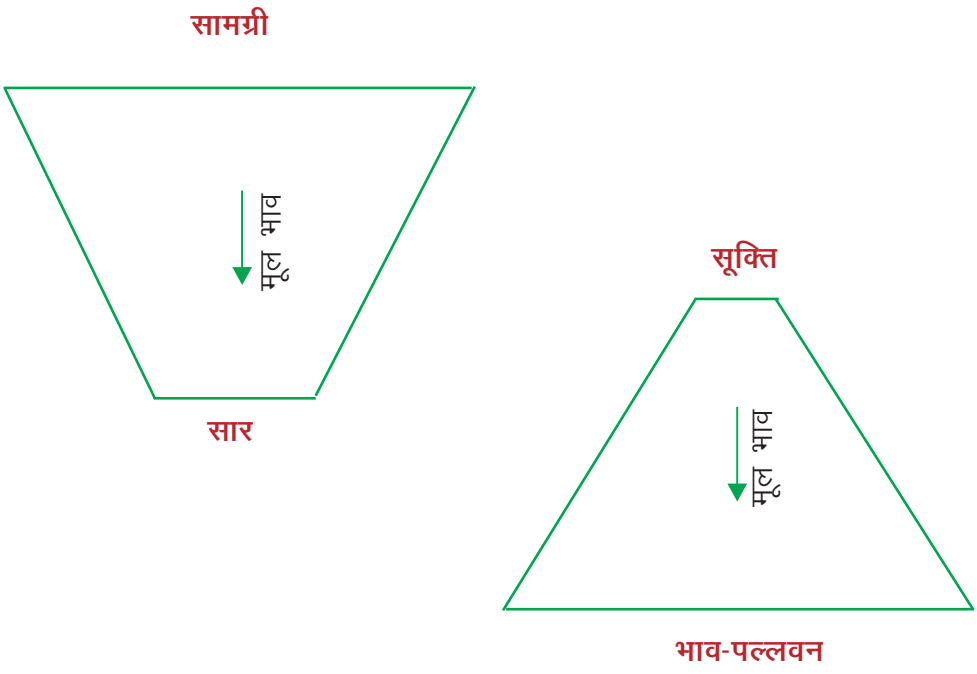

टिप्पणी

चित्रों से बात स्पष्ट हो गई न ? मूल सामग्री में विस्तार होता है। स्पष्ट है कि समझाने के लिए बातें विस्तार में कही जाती हैं। उसका मूल भाव या सार छोटा होता है और संक्षेप में लिखा जा सकता है। इसीलिए, आरेख में सामग्री वाली लकीर लंबी है, सार वाली लकीर सामग्री वाली लकीर की एक तिहाई है। सार-लेखन प्रायः मूल सामग्री का एक-तिहाई होता है। इसी प्रकार से, दूसरे आरेख में सूक्ति वाली लकीर छोटी है। सूक्ति तो एक-आध पंक्ति की ही होगी न ! जैसे, इसी सूक्ति को लें– 'सत्यमेव जयते' सत्य की ही जीत होती है– यह मूल भाव है। भाव-पल्लवन में इस मूल भाव को ही स्पष्ट करना होता है। कई उदाहरण आदि के द्वारा या कई तरह से कह कर इस सूक्ति को स्पष्ट करते हैं। यह मूल भाव को फैलाना या पल्लवित करना हुआ। अतः भाव-पल्लवन वाली लकीर लंबी है। आप आरेखों में यह भी देख रहे होंगे कि सूक्ति या भाव–पल्लवन के विषय वाली पंक्ति, सार वाली पंक्ति से भी छोटी है। जैसा हमने देखा, सार तो फिर भी मूल सामग्री का एक तिहाई होता है, किंतु सूक्ति एक वाक्य की या वाक्यांश वाली भी हो सकती है।

11.3 सार-लेखन के रूप

आप जान चुके हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में सार-लेखन की क्या उपयोगिता है। अलग-अलग क्षेत्रों, विषयों या कामों के लिए, सार-लेखन के कई अलग-अलग रूपों का प्रयोग किया जाता है। आइए, उनमें से कुछ के विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं :

1. अधिक शब्दों में लिखी बात को कम शब्दों में व्यक्त करने की आवश्यकता समाचार-लेखन में होती है, या फ़ैक्स करने में होती है, आदि-आदि। ऐसा प्रायः भाषा में अनेक शब्दों या वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग करके, शब्दों के दुहराव या अनावश्यक शब्दों को छाँट कर तथा वाक्य-विन्यास की शिथिलता को दूर करके किया जाता है।

2. विस्तृत लेख को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करते समय पहले उसके मूल भाव या विचार-बिंदु तथा उसे पुष्ट करने वाले संबंधित बिंदुओं को नोट कर लेते हैं। फिर ऊपर वाली विधि की सहायता से उसे संक्षेप में व्यक्त कर देते हैं।

3. उपर्युक्त सभी स्थितियों में सार-लेखक मूल सामग्री को प्रायः कई बार गौर से पढ़ कर **अपनी भाषा में** उसका सार प्रस्तुत कर देता है। किंतु, साहित्यिक रचनाओं – उपन्यास, कहानी आदि का सार प्रस्तुत करते समय यह प्रयास किया जाता है कि लेखक की भाषा और शैली भी यथासंभव बची रहे।

11.4 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

अभी आपने पढ़ा कि अभिव्यक्ति में कसावट लाने के लिए अनेक शब्दों अथवा वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। हिंदी में ऐसे असंख्य शब्द हैं, जिनका

टिप्पणी

सार-लेखन

प्रयोग करके पूरे-पूरे वाक्यांशों को एक शब्द में अभिव्यक्त किया जा सकता है। आइए, हम इनमें से कुछ पर नजर डालें :

वाक्यांश	शब्द
भले-बुरे का विचार न रखने वाला	अविवेकी
जिसे क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
जिसे कोई जीत न सके	अजेय
ऐसे स्थान पर रहना, जिसका कोई पता न पा सके	अज्ञातवास
बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कही गई बात	अत्युक्ति
जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्‌वितीय
जो निंदा के योग्य न हो	अनिंद्य
जिसके बिना काम न चल सके	अनिवार्य
वह नियम, जो व्यापक नियम के विरुद्‌ध हो	अपवाद
जिसका विवाह न हुआ हो	अविवाहित
जिस पर अभियोग चलाया जाए	अभियुक्त
जिस पर विश्वास किया जा सके	विश्वसनीय
जो पहले कभी न हुआ हो	अभूतपूर्व/अपूर्व
ईश्वर में विश्वास करने वाला	आस्तिक
जड़ सहित नष्ट कर देना	उन्मूलन
जिस मिट्‌टी में प्रचुर मात्रा में पैदावार होती हो	उपजाऊ
जो काम से जी चुराता हो	कामचोर
किसी वस्तु को देखने या बात को जानने की प्रबल इच्छा	कुतूहल
उपकार को मानने वाला	कृतज्ञ
उपकार/एहसान को न मानने वाला	कृतघ्न
किसी टूटे या गिरे हुए मकान या इमारत का बचा हुआ भाग	खंडहर/भग्नावशेष
वह मनुष्य, जिसने किसी घटना को साक्षात् देखा हो	गवाह/साक्षी
जो दया का पात्र हो	दयनीय
बहुत दूर तक की बात सोचने वाला	दूरदर्शी
स्थल का वह भाग, जो चारों ओर से जल से घिरा हो	द्‌वीप
किसी रास्ते से कहीं घुसने या जाने की रुकावट	नाकाबंदी
जिससे हानि या अनर्थ की आशंका न हो	निरापद
वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो	निर्जन

टिप्पणी

जिस पर कोई विवाद न हो	निर्विवाद
जिसके हाथ में कोई शस्त्र न हो	निहत्था/निःशस्त्र
साफ़ या शुद्ध किया हुआ	परिष्कृत
दूसरों के साथ भलाई का व्यवहार करने वाला	परोपकारी
जिसके आर-पार दिखाई दे सके	पारदर्शी
एक बार कही गई बात को फिर से कहना	पुनरुक्ति
पहले जैसा ही	पूर्ववत
किसी लिखी हुई चीज़ की नकल	प्रतिलिपि
किसी काम में दूसरे से आगे बढ़ जाने की होड़	प्रतिस्पद्र्धा
जिसे देखकर भय होता हो	भयानक
जो कम खर्च में काम चलाता हो	मितव्ययी
जिस पर कुछ विचार करने की आवश्यकता हो	विचारणीय
वह जो वेतन लेकर काम करता हो	वेतनभोगी
मेहनत करके पेट पालने वाला व्यक्ति	श्रमजीवी/मेहनतकश
जिसके बेढंगेपन पर लोग हँसी उड़ाएँ	हास्यास्पद
हित या भला चाहने वाला	हितैषी
किसी के रूप-रंग आदि का विवरण	हुलिया

11.5 सार-लेखन की प्रक्रिया

सार-लेखन करते समय कुछ बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है। इन्हें नीचे दिया गया है :

सार लेखन के चरण

1. मूल बिंदु का चयन
2. संबंधित बिंदुओं का चयन
3. मूल और संबंधित बिंदुओं को क्रम देना
4. अनावश्यक सामग्री को छोड़ना
5. उपयुक्त आकार में सार लिखना

आइए, हम एक-एक करके इन पर विचार करें:

1. आप किसी भी गद्यांश को पढ़ने पर पाएँगे कि लेखक उसमें विशिष्ट रूप से किसी बात पर पाठक का ध्यान केंद्रित करना चाहता है, यही उस गद्यांश का मूल भाव होता है। गद्यांश को दो-तीन बार पढ़कर उसके मूल भाव को समझा जा सकता है।

टिप्पणी

2. इस मूल भाव को स्थापित करने के लिए उससे संबंधित कुछ बातें और लिखी जाती हैं, जिनसे मूल भाव की पुष्टि होती है। ये संबंधित बिंदु कहे जाते हैं।

3. सार-लेखक को मूल भाव और उसको पुष्ट करने वाले संबंधित बिंदुओं को पहचान कर उन्हें अपने लिए एक क्रम देना होता है।

4. अपने लेख को स्पष्ट और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए और लेख के मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए लेखक उसकी व्याख्या करता है तथा अनेक उदाहरण देता है। आवश्यकता पड़ने पर वह उस भाव को दोहराता भी है। मूल भाव की पहचान के साथ-साथ हमें उन सब बातों को भी पहचानना होता है, जिन्हें लेखक अपने मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त करता है। ये हैं :

   (क) व्याख्या

   (ख) उदाहरण

   (ग) दोहराव

सार-लेखक के लिए ये बातें अनावश्यक सामग्री होती हैं। श्रेष्ठ सार-लेखन के लिए इन्हें पहचानना भी अत्यंत आवश्यक है।

आइए, एक उदाहरण से हम इस बात को समझने की कोशिश करें :

भारत का काव्य–रूपी आकाश–मंडल अगणित प्रभापूर्ण जुगनुओं से देदीप्यमान है, पर तुलसीदास का तेज, उज्ज्वलता और चमत्कार तथा उनकी प्रदीप्त कांति और कीर्ति सबसे बढ़–चढ़ कर है। वे इस आकाश–मंडल के असंख्य तारों के बीच मध्याह्नकालीन प्रचंड मार्तंड के समान प्रकाशमान हैं। किसी ने कहा भी है कि तुलसीदास हमारे ही नहीं, हमारी आगामी संतानों के लिए भी एक अनुकरणीय और अनुपम आदर्श हैं। जो स्थान अंग्रेज़ी साहित्य में शेक्सपीयर का है, उससे कहीं ऊँचा स्थान हम हिंदी साहित्य में तुलसीदास को देते हैं। और क्यों न दें, ये कोरे कवि नहीं थे, वरन् ये तो एक अद्‌वितीय चरित्र वाले कवि–सम्राट, परमोच्च श्रेणी के संत, राम के अनन्य भक्त, धर्म और नीति के पथ–प्रदर्शक, दार्शनिक, गंभीर तत्त्वों को सरल–सरस शब्दावली में समझाने वाले उपदेशक और भविष्य के गर्भ में निहित घटनाओं को बताने वाले महात्मा भी थे।

आइए, पहले हम इस अनुच्छेद के मूल भाव को समझने का प्रयास करें। हम यह कैसे करेंगे?

इस गद्यांश के मूल भाव को समझकर यहाँ लिखिए –

.....

.....

.....

टिप्पणी

- आपने ठीक समझा, इस गद्यांश का मूल भाव है – **कवि तुलसीदास की महत्ता।**
- इस मूल भाव को पुष्ट करने वाले संबंधित बिंदु हैं :

  (क) भारत में असंख्य श्रेष्ठ कवि हैं।

  (ख) तुलसीदास उनमें अधिक श्रेष्ठ हैं।

  (ग) वे कोरे कवि ही नहीं, बल्कि चरित्रवान, रामभक्त, महात्मा, दार्शनिक, पथ-प्रदर्शक, सरल भाषा में गूढ़ार्थ बताने वाले उपदेशक और भविष्य-द्रष्टा भी थे।

- ऊपर इन बिंदुओं को व्यवस्थित क्रम भी दे दिया गया है।
- आइए, देखें कि उक्त गद्यांश के कौन-कौन से अंश व्याख्या, उदाहरण और दोहराव की कोटि में आते हैं:

– वे इस आकाश-मंडल के असंख्य तारों में मध्याह्नकालीन मार्तंड के समान प्रकाशमान हैं – यहाँ तक इसी बात की व्याख्या की गई है कि तुलसी का तेज काव्य-रूपी आकाश-मंडल में सर्वाधिक बढ़-चढ़ कर है।

– अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने शेक्सपीयर का उदाहरण दिया है।

– वे अद्‌वितीय चरित्र वाले कवि-सम्राट, परमोच्च श्रेणी के महात्मा थे – इससे आगे इसी भाव की व्याख्या है और ऊपर आए भाव को दोहराया गया है।

सार-लेखन करते समय हम ऊपर की बातों को छोड़ सकते हैं।

- अपनी बात को प्रभावशाली बनाने के लिए लेखक निम्नलिखित भाषाई कौशलों का प्रयोग भी करता है :

1. मुहावरे-लोकोक्तियाँ
2. कथाएँ
3. अलंकार
4. सूक्तियाँ और उदाहरण
5. विशेष शैली

उक्त गद्यांश में 'बढ़-चढ़कर होना' मुहावरा है। 'काव्य-रूपी आकाश' में रूपक अलंकार है। 'किसी ने कहा है' वाक्य में उदाहरण है। 'अगणित प्रभापूर्ण जुगनुओं'..... वाक्य में दो विशेषण हैं और बहुत–सी संज्ञाएँ। 'क्यों न दें' विशेष शैली का प्रयोग है।

सार-लेखन करते समय हम ऐसी बातों को भी छोड़ देंगे।